रोजगार एवं व्यवसाय के क्षेत्र में महिला नेतृत्व एवं मीडिया की भूमिका

✧ डॉ. एल.एस. गजपाल ★ कु. अंजना खुटियारे

आज 21वीं सदी भारत में महिला सशक्तिकरण की व्यापक चर्चा हो रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह प्रमाणित हो गया है कि देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक विसंगतियों एवं विपरीत परिस्थितियों को दिशागत करने में केवल महिलाएँ ही सक्षम हैं। भारत में महिलाओं के सम्मान की एक गौरवशाली परम्परा रही है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महिला कर्मियों का योगदान 60-80 प्रतिशत तक है। देश में कुल 23.99 % महिला ही वर्ष भर आर्थिक उत्पादन क्रियाओं में संलग्न रह पाती हैं तथा 8.23 % महिलाएँ बिल्कुल गैरकार्यशील की श्रेणी में आती हैं। कुल श्रम शक्ति का केवल 20.22 % ही महिलाएँ प्रतिनिधित्व कर रही हैं। इस संदर्भ में युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति, हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिये जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके। हमें नारी शक्ति के उद्धारु नहीं, वरन् उनके सेवक और सहायक बनना चाहिये। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भाँति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्ज्वल भविष्य की संभावनायें सन्निहित है।'' विश्व के अधिकांश देशों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बढ़ रही है। महिलाएँ रोजगार के सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं। अंतरिक्ष उड़ान में भाग लेन वाली भारतीय महिलाएँ कल्पना चावला हो या फिर सुनीता विलियम्स, ज्वालामुखी की खोज, पर्वतारोहण, रॉफ्टिंग, सेना तथा मैनेजमेंट जैसे जटिल रूप साहस पूर्ण क्षेत्रों में भी महिलाओं की अद्भूत भागीदारी बढ़ रही है। दक्षिण-पूर्व एशिया में सकल रोजगार में महिलाओं का अनुपात तेजी से बढ़ा है। अमेरिका में कामकाजी महिलाओं की संख्या 1950 में एक तिहाई थी, जो अब बढ़कर दो तिहाई हो गई है। इटली और जापान में यह प्रतिशत 40 है। कुछ दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में 80 % से अधिक महिलायें कामकाजी हैं और निर्यात में महिलाओं का योगदान 100 % पहुँच गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी के 56 फीसदी तक पहुँचने की स्थिति बदली है। सूचना प्रौद्योगिकी, रिटेल, व्यवसायिक, वित्तीय सेवायें, ट्रेवल, मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, होटल, मीडिया, कैटरिंग, कानूनी सेवाएँ, कॉल सेंटर, सलाहकार और उपभोगता सेवाएँ जैसे नए क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। कॉल सेंटर जैसे नए क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धि 40 फीसदी है। जहाँ तक महिलाओं के जिम्मेदारी के पद पर नियुक्ति का मामला है, सभी क्षेत्रों में भेदभाव देखा जा सकता है। यहाँ तक कि सारी दुनिया को खबर देने और खबर लेने वाली पत्रकारिता में भी स्त्रियों के प्रति भेदभाव की सामाजिक सोच अपना कर अपना काम करती रहती हैं और दो चार अपवादों को छोड़कर किसी भी पत्र, पत्रिका या मीडिया संस्थान के शीर्ष स्थान पर दिखाई नहीं देती। ऐसी स्थिति में महिला सशक्तिकरण का प्रश्न अवश्यम्भावी हो जाता है।

अध्ययन पद्धति–प्रस्तुत शोध पत्र हेतु अन्तर्वस्तु विश्लेषण पद्धति उपयोग में लाई गई है, जो द्वितीयक सामग्री विशेष रूप से सूचनाओं एवं तथ्यों को संकलित करने की प्रमुख प्रविधि है।

अध्ययन का उद्देश्य–1. राष्ट्रीय समाचार-पत्रों में महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित समाचारों का अध्ययन करना। 2. महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित समाचारों की अन्तर्वस्तु का अध्ययन करना।

संकलित तथ्यों का विश्लेषण–प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम नवभारत समाचार पत्र में वर्ष 2001 में जुलाई से दिसम्बर माह तक के समाचारों के अन्तर्वस्तु के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि 6 माह में कुल 31400 समाचार प्रकाशित हुए, जिसमें 486 (1.55 %) समाचार महिलाओं से सम्बन्धित रहे, जबकि केवल 69 (0.33 %) समाचार ही महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित रहे, जिसमें केवल 14 (0.04 %) समाचार ही महिलाओं की उद्योग एवं व्यवसाय जगत में सशक्तिकरण से सम्बन्धित रहे हैं।

जबकि वर्ष 2006 में 6 माह में कुल 31937 समाचार प्रकाशित हुए, जिसमें 1123 (3.52 %) समाचार महिलाओं से सम्बन्धित थे, कुल समाचारों में 131 (0.41 %) ही महिला सशक्तिकरण और 20 (0.06 %) समाचार उद्योग एवं व्यवसाय जगत में महिलाओं की बढ़ती प्रस्थिति से सम्बन्धित था। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2006 में नवभारत समाचार पत्र में महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित समाचारों को कुछ ज्यादा स्थान दिया गया पर इसे संतोषजनक नहीं कहा जा सकता।

उपरोक्त स्थिति का विश्लेषण दैनिक भास्कर समाचार-पत्र के संदर्भ में भी देखने का प्रयासकिया गया, जिसमें यह पाया गया है कि वर्ष 2001 में दैनिक भास्कर समाचार पत्र में कुल 31233 समाचार प्रकाशितहुए, जिसमें से 513 (1.64 %) समाचार ही महिलाओं से सम्बन्धित रहे, उसमें भी 63 (0.20 %) ही महिला सशक्तिकरण तथा 12 (0.03 %) उद्योग एवं व्यवसाय जगत में महिलाओं की बढ़ती प्रस्थिति से रहे, जबकि वर्ष 2006 में कुल प्रकाशित 32236 समाचारों में 1126 (3.48%) महिलाओं से सम्बन्धित रहे, 133 (1.81 %) महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित और केवल 34 (0.10 %) समाचार ही उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में महिलाओं की सशक्त भूमिकाओं से सम्बन्धित था। स्पष्ट है कि 5 वर्षों के अन्तराल के बाद भी राष्ट्रीय समाचार-पत्रों में महिला सशक्तिकरण के समाचारों को उचित स्थान मिलना शेष है।

✧ प्राध्यापक, समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
★ एम.फिल., समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकलित तथ्यों की अन्तर्वस्तु का विश्लेषण–नवभारत तथा दैनिक भास्कर दोनों ही राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की अन्तर्वस्तु में अधिकतर समाचार राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उपलब्धियों से सम्बन्धित थे, क्षेत्रीय व स्थानीय समाचारों को नाममात्र स्थान दिया गया है। विभिन्न माह में प्रकाशित समाचारों की अन्तर्वस्तु का विश्लेषण निम्नानुसार है–

जुलाई माह में–1. जलसा दिखाने बेताब है महिलायें (राष्ट्रीय) 2. दोहरा दायित्व निभाती महिलायें (राष्ट्रीय) 3. प्रथम महिला ने किया चिकित्सालयों का अवलोकन (क्षेत्रीय) 4. डिजाइनिंग में बढ़ रहा है, महिलाओं का रुझान (राष्ट्रीय) 5. आखिर बन गई डॉक्टर (क्षेत्रीय)

अगस्त माह में–1. भरे उड़ान बेहतर भविष्य की एयर होस्टेज (राष्ट्रीय) 2. समस्या से जूझना सीखें कृष्णा मित्रा (क्षेत्रीय)

माह सितम्बर में– 1. इंदिरा नूई ताकत पर महिलाओं की कोर्ष्य सूची में (राष्ट्रीय) 2. महिला पत्रकार बनी, मिस इंडिया-कैलीफोर्निया (अन्तर्राष्ट्रीय) 3. महिलायें करेंगी कॉमेडी (राष्ट्रीय) 4. उड़ान साधने में समर्थ है साक्षी (राष्ट्रीय) 5. काय दमदार न हो तो, दरवाजे बंद होने में कोई देर नहीं–दुर्गा जसराज (राष्ट्रीय) 6. इंदिरा नूई की विश्व मंच पर धातु (राष्ट्रीय) 7. एयर होस्टेज बनेगी भारतीय आदिवासी महिलायें (क्षेत्रीय)

माह अक्टूबर में–1. एशिया यूरोप की ताकतवर महिलाओं में 3 भारतीय (अन्तर्राष्ट्रीय) 2. फॉर्चन की सूची में 3 भारतीय महिलायें (राष्ट्रीय) 3. प्रीजा का राष्ट्रीय रिकॉर्ड (अन्तर्राष्ट्रीय) 4. अब तुलिका को धार दे रही तस्लीमा (अन्तर्राष्ट्रीय) 5. आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता को राष्ट्रीय पुरस्कार (क्षेत्रीय)

माह नवम्बर में–1. सूर साम्राज्ञी को फेंच सम्मान 2. पुलिस में 10 फीसदी महिलायें हों 3. महिलायें दिखायेंगी अपना हुनर (स्थानीय) 4. डिस्ट्रीक चेयरमेन श्रीनू पटनायक (क्षेत्रीय) 5. पाक मिलेगी एकेडेमी में महिलाओं का पहला बेच (अन्तर्राष्ट्रीय) 6. समाज सेवा के लिये मिला प्लेट फार्म (राष्ट्रीय)

माह दिसम्बर में–1. भारतीय महिलायें मजबूत (राष्ट्रीय) 2. महिलायें करेंगी कॉमेडी (राज्यीय)

प्राप्त समाचारों के अन्तर्वस्तु विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उद्योग एवं व्यवसाय से सम्बन्धित प्रकाशित समाचारों में अधिकतर समाचार महिलाओं के राष्ट्रीय स्तर से सम्बन्धित तथा महिलाओं के सम्मान, समानता तथा उनके व्यवसाय में बढ़ते प्रतिनिधित्व, उपलब्धि एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके बढ़ते वर्चस्व की ओर संकेत करते हैं।

समग्र विश्लेषण-तालिका क्रमांक-1 उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित महिला सशक्तिकरण समाचारों का विवरण माह, वर्ष एवं प्रकाशित समाचारों की संख्या-नवभारत समाचार-पत्र

माह	वर्ष 2001				वर्ष 2006			
	कुल समाचार	महिलाओं से संबंधित समाचार	महिला सशक्तिकरण से संबंधित समाचार	उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित समाचार	कुल समाचार	महिलाओं से संबंधित समाचार	महिला सशक्तिकरण से संबंधित समाचार	उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित समाचार
जुलाई	4895	127	18	01	5708	180	30	03
अगस्त	5189	81	9	07	6006	210	22	01
सितम्बर	5209	73	10	00	5736	210	15	05
अक्टूबर	5573	48	13	02	4878	208	20	05
नवम्बर	5386	80	09	02	4443	235	32	04
दिसम्बर	5155	77	10	02	5166	80	12	02
योग	31407	486	69	14	31937	1123	131	20
प्रतिशत	(100%)	(1.55%)	(0.3%)	(0.04%)	(100%)	(3.52%)	(0.41%)	(0.06%)

समग्र विश्लेषण-तालिका क्रमांक-2 उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित महिला सशक्तिकरण समाचारों का विवरण माह, वर्ष एवं प्रकाशित समाचारों की संख्या-दैनिक भास्कर समाचार-पत्र

माह	वर्ष 2001				वर्ष 2006			
	कुल समाचार	महिलाओं से संबंधित समाचार	महिला सशक्तिकरण से संबंधित समाचार	उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित समाचार	कुल समाचार	महिलाओं से संबंधित समाचार	महिला सशक्तिकरण से संबंधित समाचार	उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित समाचार
जुलाई	4914	97	10	02	5698	172	23	05
अगस्त	4680	109	27	07	5995	232	32	03
सितम्बर	5287	63	05	00	5665	196	16	02
अक्टूबर	5623	49	13	02	5236	139	20	11
नवम्बर	5170	83	06	01	4172	269	34	11
दिसम्बर	5559	112	02	00	5570	118	08	02
योग	31233	513	63	12	32336	1126	133	34
प्रतिशत	(100%)	(1.64%)	(0.20%)	(0.03%)	(100%)	(3.48%)	(11.81%)	(0.10%)

संदर्भ ग्रन्थ–

1. सेतिया, सुभाष, रोजगार के क्षेत्र में महिलायें : जेंडर बजटिंग योजना मासिक पत्रिका, अक्टूबर 2006, पृ. (43, 44, 47) 2. मीडिया पियर्स, त्रैमासिक पत्रिका, दिसम्बर 2006 से फरवरी 2007 3. गुप्ता, रमणिका, कदम और कुदाल के बहाने : प्रथम संस्करण 2004, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृ. (571, 58) 4. महिलाओं के प्रगति सम्बन्धी आंकड़े : जेंडर बजटिंग योजना, मासिक पत्रिका, अक्टूबर 2006, पृ. (50) 5. चौधरी, अल्पना, भारतीय महिलायें और पानिकी सहकारिता : प्रथम संस्करण 2006, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. (112, 118) 6. शर्मा, ऋषभदेव, स्त्री सशक्तिकरण के विविध आयाम : प्रथम संस्करण 2005, गीता प्रकाशन, रामकोट, हैदराबाद, पृ. (37, 41, 58) 7. मल्होत्रा, रश्मि, नये आयामों को तलाशती नारी : प्रथम संस्करण 2003, नव चेतन प्रकाशन, दिल्ली, पृ. (39) 8. प्रथम, खेतान, उप-निवेश में स्त्री : प्रथम संस्करण 2003, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. (21) 9. रानी, आशु, महिला विकास कार्यक्रम : प्रथम संस्करण 1999, इनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. (55) 10. मिश्र, इंदिरा, गरीब महिलायें उद्धार एवं रोजगार : प्रथम संस्करण 2002, किताबघर, नई दिल्ली, पृ. (111) 11. शर्मा, नारायण, झा, संजीव कुमार, विनायक, वाणी, विनायक, सुषमा, महिला सशक्तिकरण एवं समग्र विकास : प्रथम संस्करण, 2005, भारत बुक सेंटर, लखनऊ, पृ. (43, 73, 93, 100)